بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 11.11.16 कनाडा।

आज जमाअत के रूप में एक मात्र अहमदिया जमाअत ही है जिस पर कभी सूर्यास्त नहीं होता। कहाँ तो एहरारी लोग क़ादियान से अहमदियत की आवाज़ को नष्ट करने की बात करते थे और कहाँ आज दुनया के इस पश्चिमी कोने से पूरे विश्व में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को आपका एक ग़ुलाम और तुच्छ सेवक पहुंचा रहा है। अल्लाह तआला इन समस्त शामिल होने वालों की जान और मालों में अत्यधिक बरकतें प्रदान करे और इनकी क़ुर्बानियों को क़बूल फ़रमाए तथा भविष्य में भी बढ़ चढ़ कर बलिदान का सामर्थ्य प्रदान करे तथा ख़िलाफ़त से इनका सम्बंध सदैव दृढ़ता पूर्वक स्थापित करता रहे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर माल की क़ुर्बानियों पर प्रकाश डालते हुए फ़रमाया कि दुनया में मनुष्य माल से अत्यधिक प्यार करता है इसी लिए स्वप्नफल की विद्या में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति देखे कि उसने जिगर निकाल कर किसी को दिया है तो इससे अभिप्रायः माल है। यही कारण है कि वास्तविक ईश्प्रेम तथा ईमान की प्राप्ति के लिए फ़रमाया- لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ अर्थात वास्तविक नेकी को कदापि न प्राप्त कर सकोगे जबतक कि तुम सर्वप्रिय वस्तु ख़र्च न करोगे, क्यूँकि अल्लाह के बन्दों के साथ सहानुभूति तथा सुन्दर व्यवहार का बड़ा भाग, माल को ख़र्च करना है जिसके बिना ईमान सम्पूर्ण एंव व्यापक नहीं होता। फ़रमाया कि जब तक इंसान बलिदान न दे दूसरे को लाभ कैसे पहुंच सकता है। दूसरे का हित तथा सहानुभूति के लिए बलिदान अनिवार्य चीज़ है और इस आयत لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ में इस बलिदान की शिक्षा एंव निर्देश दिया गया है। अतः माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करना भी इंसान के सौभाग्य और तक़्वा पर चलने वाला होने का स्तर और कसौटी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए कठिनाईयों की चिंता न करें कयूँकि असीम आनन्द एंव अनन्त आराम का प्रकाश इस अस्थाई कठिनाई के पश्चात मोमिन को मिलता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल की दुनया समझती है कि माल को जमा करना तथा उसे केवल अपनी सुख समृद्धि के लिए ख़र्च करना ही उनके लिए प्रसन्नता एंव शांति का कारण बन सकता है परन्तु एक मोमिन समझता है, जिसको दीन का वास्तविक बोध एंव ज्ञान हो कि निःसन्देह अल्लाह तआला ने दुनया की नेअमतें तथा सुविधाएँ इंसान के लिए पैदा फ़रमाई हैं परन्तु जीवन का वास्तविक उद्देश्य अल्लाह तआला की प्रसन्नता है, तक़्वा पर चलना है, अल्लाह तआला का हक़ अदा करना है तथा उसके बन्दों का हक़ अदा करना है। अल्लाह तआला ने इस विषय को इस आयत में बयान फ़रमाया है जिसकी व्याख्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई है कि वास्तविक शांति तो नेकियाँ करने से मिलती है माल एकत्र करने से नहीं मिलती तथा नेकी उस समय तक अपने स्तर को प्राप्त नहीं कर सकती जब तक अल्लाह तआला तथा उसके बन्दों का हक़ अदा करने के लिए वह चीज़ न ख़र्च करो जिससे तुम्हें प्यार है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि धन दौलत ऐसी वस्तु है जिससे इंसान बड़ा प्यार करता है। आज यदि हम निरीक्षण करें तो दुनया के उपद्रव, आतंक और विघटन का कारण धन दौलत से प्यार की हवस है। दुनयादार को तो यह भी नहीं पता कि यदि उसके पास अत्यधिक धन आ गया है तो उसे ख़र्च किस प्रकार करना है। ख़र्च तो निःसन्देह ये लोग करते हैं परन्तु अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए न कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए और नेकियों के लिए।

भौतिक आवश्यकता के अतिरिक्त हम अहमदियों के लिए रूहानी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए माल को ख़र्च करना भी अनिवार्य है क्यूँकि मार्ग दर्शन के सम्पूर्ण प्रसार का काम अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सपुर्द किया गया है। वह मार्ग दर्शन जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सम्पूर्ण मानव जाति के लिए लाए थे और जिसके फैलाने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व्याकुल थे, उसके पूरा होने का ज़माना यह है। जिस प्रकार यह काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सपुर्द किया गया था उसी प्रकार अब यह काम आपके मानने वालों के सपुर्द किया गया है। उनके सपुर्द है जो यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम दीन को दुनया पर प्राथमिकता देंगे। धनवान लोग तो अपनी मौज-मस्ती पर ख़र्च करते हैं परन्तु मोमिन वह है जिसको अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वास्तविक नेकी प्राप्त करने के लिए, अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए अपने आपको कठिनाई में डाल कर उस माल में ख़र्च करो जिससे तुम्हें प्यार है। इस ज़माने में अहमदिया जमाअत ही वह जमाअत है जो एक निज़ाम के अंतर्गत इस ख़र्च को करती है, जो इस्लाम के प्रसार के लिए ख़र्च करती है जिसमें विभिन्न साधनों के द्वारा तबलीग़ के काम हैं तथा सृष्टि से सहानुभूति के कारण उनके हक़ अदा करते हुए उन पर ख़र्च किया जाता है तथा असंख्य ऐसे लोग हैं जो इस कठिनाई को उठाकर यह ख़र्च करते हैं तथा इस विश्वास के साथ करते हैं कि जहाँ यह ख़र्च अल्लाह तआला की निकटता तथा उसकी प्रसन्नता प्राप्ति करने वाला बनाएगा वहाँ यह भी संतोष है कि उचित प्रकार से ख़र्च होगा। इस बात को तो कई ग़ैर अहमदी भी स्वीकार किए बिना नहीं रहते कि जमाअत की आर्थिक तथा व्यय व्यवस्था उत्तम है।

हमारे कबाबीर के मुबल्लिग़ ने एक घटना लिक्खी है कि योरोशलम युनीवर्सिटी के दो रिटायर्ड प्रोफ़ैसर अपने दो बाहर के दोस्तों के साथ हमारे मिशन कबाबीर में आए। उनके साथ जमाअत के विषय में बात करना का अवसर मिला, निज़ाम-ए-जमाअत के विषय में बताया गया। उन मेहमानों में एक आस्ट्रीया से सम्बंध रखने वाले प्रोफ़ैसर थे। अन्त में वे कहने लगे कि मुझे अहमदिया जमाअत की जो सबसे अच्छी बात लगी वह यह है कि आपकी जमाअत का आर्थिक निज़ाम बड़ा पाक साफ़ है। कहने लगे कि दुनया में केवल पवित्र माल से क्रांति लेकर आना वस्तुतः आप लोगों के भाग्य में ही लिखा हुआ है तथा इसके लिए आपको मुबारक हो और चन्दों के लिए शुद्ध माल अनिवार्य है। अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया है कि अपने उस माल में से दो जो पवित्र धन हो, जो जाइज़ तरीक़े से कमाया हुआ माल हो। धोखा देकर कमाया हुआ माल न हो, टैक्स से बचाकर कमाया हुआ माल न हो अथवा किसी भी तरीक़े से उनुचित रंग में कमाया हुआ माल न हो। यह बात उस दुनयादार को भी नज़र आ गई कि इंक़लाब लाने वाले यही लोग हैं। अतः जब तक हमारी नीयतें नेक रहेंगी, जब तक हम पवित्र धन प्राप्त करने का प्रयास करते रहेंगे तथा उसको ख़ुदा तआला के लिए ख़र्च करेंगे, निःसन्देह तब हम इंक़लाब लाने का साधन बन सकेंगे और यह क्रांति हमारे भाग्य में है क्यूँकि अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह वादा है। कोई सांसारिक क्रांति हमने नहीं लानी बल्कि रूहानी क्रांति लानी है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को दुनया में पहुंचाना है, तौहीद का क़याम करना है और बन्दों के हक़ अदा करने हैं और ये कोई इंसानी बातें नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निष्ठावान और प्रिय गिरोह बढ़ाने का वादा किया हुआ है। जमाअत की माली क़ुर्बानियों का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं यह ख़ूब जानता हूँ कि हमारी जमाअत ने वह निष्ठा एंव आज्ञा पालन दिखाया है जो सहाबा तंगी के दिनों में दिखाते थे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक अवसर पर आपने जमाअत के लोगों के बलिदान के स्तर को देखकर इस आश्चर्य को भी प्रकट किया था कि किस प्रकार ये लोग इतनी क़ुर्बानी देते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज मैं तहरीक-ए-जदीद के नए साल की घोषणा भी करुंगा इस लिए मैं कुछ उन क़ुर्बानी करने वालों की घटनाएँ भी पेश करता हूँ जो माल की क़ुर्बानी के विषय में हैं। केवल धनी देशों में नहीं बल्कि निर्धन देशों में बिल्कुल नए शामिल होने वाले अहमदी जो हैं, अल्लाह तआला अहमदियत क़बूल करने के बाद उनके भी किस प्रकार दिलों को फेरता है, आश्चर्य होता है कि तंगी के बावजूद वे बलिदान में आगे बढ़ने वाले हैं। अतः मुबल्लिग़ इंचार्ज गनाकरी लिखते हैं कि यहाँ एक जमाअत है सोनब यावी, उसकी मस्जिद के इमाम अपनी मस्जिद सहित इसी वर्ष जमाअत में शामिल हुए। जब उन्हें जमाअत के माली निज़ाम तथा तहरीक-ए-जदीद के महत्त्व इत्यादि के विषय में बताया गया तो कहने लगे कि मैंने स्वयं भी चन्दा और ज़कात पर अत्यधिक भाषण दिए हैं परन्तु इतना सुदृढ़ तथा व्यापक माली निज़ाम मैंने कहीं और नहीं देखा और न कभी ऐसे

निज़ाम के विषय में सुना था। अतः श्रीमान जी ने उसी समय चन्दे की अदायगी की और कहा कि मैं आपसे वादा करता हूँ कि भविष्य में हर महीने हमारी पूरी जमाअत चन्दा अदा करेगी। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ये वे लोग हैं जो निर्धन क्षेत्रों के हैं, अत्यंत निचले स्तर के निर्धन हैं परन्तु क़ुर्बानियों में ये सर्वोच्च स्तर पर पहुंचने वाले लोग हैं।

फ़रमाया- फिर यह केवल एक देश की कहानी नहीं बल्कि यह हवा विश्व के अनेक देशों में चल रही है। इंडिया से आन्ध्रा व तिलंगाना के इंस्पैक्टर शहाबुद्दीन साहब कहते हैं कि हैदराबाद के एक ग़रीब दोस्त हैं उन्होंने अपना व्यापार बीस हज़ार रुपए से आरम्भ किया, एक छोटी सी दुकान चलाते हैं, नमाज़ों के समय दुकान बन्द कर देते हैं। साल में एक महीने की पूरी आमदनी तहरीक-ए-जदीद में अदा करते हैं। इस साल भी उन्होंने साठ हज़ार रुपए तहरीक-ए-जदीद में दिए। किराए के मकान में रहते हैं। इंस्पैक्टर साहब कहते हैं कि एक दिन मैंने उन्हें कहा कि आप अपना निजी घर ख़रीद लें, इस पर कहने लगे कि जैसा चल रहा है चलने दें, दुनया वैसे भी विनाश की ओर बढ़ रही है, माल जमा करने की क्या आवश्यकता है, क्यूँ न मैं अल्लाह तआला के लिए ख़र्च करता रहूँ।

जर्मनी के सैक्रेट्री तहरीक-ए-जदीद ने लिक्खा है कि एक महिला हैं जिन्होंने अपना नाम प्रकट नहीं किया। तहरीक-ए-जदीद के दफ़्तर में आईं और अपना सारा माल, आभूषण तहरीक-ए-जदीद में पेश कर दिए। आभूषण इतने अधिक थे कि पूरी मेज़ ज़ेवरों से भर गई। सोने के हार अंगूठियाँ, चूड़ियाँ, बड़ी संख्या में चीज़ें थीं परन्तु उन्होंने कहा कि मेरा नाम प्रकट नहीं करना ताकि मेरी क़ुर्बानी केवल ख़ुदा तआला के लिए हो। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आभूषण महिलाओं की कमज़ोरी है, परन्तु अहमदी महिलाएँ हैं जो ये क़ुर्बानियाँ करती हैं।

रूस की भी कई घटनाएँ हैं, एक दोस्त लीना साहब कहते हैं- उनकी प्रस्थितयाँ बड़ी दयनीय थीं, किराए के फ़्लैट में रहते थे, कई प्रकार की दुविधाओं में घिरे हुए थे परन्तु अपने लाज़मी चन्दे तथा तहरीक-ए-जदीद का चन्दा अपने सामर्थ्यानुसार अदा करते रहे। यह दोस्त कहते हैं कि चन्दे की बरकत से मेरी बीवी को मेडिकल कॉलिज पूरा होने के बाद सरकारी नौकरी मिल गई तथा सरकार ने बच्चों के निवास के लिए ऋण की व्यवस्था भी कर दी। अब आर्थिक स्थिति पहले से बहुत अच्छी हो गई है और अल्लाह की कृपा से हमारे पास दो गाड़ियाँ भी आ गईं हैं। ये कहते हैं कि सब अल्लाह तआला का फ़ज़्ल तथा चन्दा अदा करने का परिणाम है। पहले बड़ी कठिन प्रस्थितयों में भी हम चन्दे देते रहे और अब तो अल्लाह तआला ने बड़ी समृद्धि प्रदान कर दी है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अब रूस में बैठा हुआ एक व्यक्ति, उसको भी अल्लाह तआला प्रदान कर रहा है, अफ़्रीक़ा वाले को भी अल्लाह तआला प्रदान कर रहा है अन्य देशों में भी, यूरोप में भी, तो यह सब अल्लाह तआला के व्यवहार का प्रमाण है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो वादा फ़रमाया था, प्रेमियों की जमाअत प्रदान करने का तथा उनको ईमान में बढ़ाने का, जो अल्लाह तआला की ओर बढ़ते हैं उनको ईमान में बढ़ाता भी है।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जमाअत के लोगों की क़ुर्बानियों के कई वृत्तांत बयान फ़रमाए और फ़रमाया- माली क़ुर्बानियों तथा उन पर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के असंख्य वृत्तांत हैं जो मेरे पास आए हैं, उनमें कुछ मैंने पेश किए हैं। लगभग प्रत्येक देश में रहने वालों के साथ अल्लाह तआला का यही व्यवहार है। जो अल्लाह तआला पर भरोसा उसके लिए बलिदान देते हैं अल्लाह तआला उनको अत्यधिक प्रदान करता है। एक बुद्धि रखने वाले इंसान के लिए अहमदियत के सत्य का यही प्रमाण काफ़ी है कि किस प्रकार क़ुर्बानियों के परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला क़ुर्बानियाँ करने वालों को प्रदान करता है इस लिए कि ये चन्दे ख़ुदा तआला के दीन के लिए ख़र्च होते हैं। निर्धन देशों के लोग निःसन्देह चन्दा देते हैं परन्तु इनके ख़र्चे इनके चन्दों से बहुत बढ़ कर हैं इस लिए धनी देशों से दिए जो चन्दे होते हैं, केन्द्र इन देशों पर ख़र्च करता है जिनके अपने बजट पूरे नहीं होते। सैंकड़ों स्कूल, दर्जनों हस्पताल, मिशन हाउसेज़, सैंकड़ों मस्जिदें हर साल निर्मित होती हैं तथा इनके लिए धन राशि की आवश्यकता होती है जो तहरीक-ए-जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दों से पूरी की जाती है। इसी प्रकार एम टी ए के ऊपर भी कई मिलयान डालर व्यय होते हैं। एम टी ए के विषय में मैं यह बात भी कहना चाहता हूँ कि निरीक्षण के अनुसार यहाँ एम टी ए सुनने की जितनी रूचि होनी चाहिए वह नहीं है अथवा कम से कम मेरे ख़ुत्बे लाईव नहीं सुनते। जमाअत इतना अधिक जो

व्यय करती है यह जमाअत के प्रशिक्षण के लिए है। यदि समय का अन्तर भी है तो जो repeat आता है तो उसको सुनना चाहिए ख़ुत्बः। अल्लाह तआला ने एम टी ए को एक साधन बनाया है। ख़िलाफ़त से जमाअत का सम्बंध जोड़ने का, यदि घरों में आप लोग इस ओर ध्यान नहीं देंगे तो धीरे धीरे आपकी संतानें पीछे हटना आरम्भ कर देंगी। अतः इससे पहले कि पश्चाताप आरम्भ हो जाए, अपने आपको ख़िलाफ़त के साथ जोड़ें और इसका सर्वोत्तम माध्यम अल्लाह तआला ने एम टी ए को बनाया है इसे उपयोग करें कम से कम ख़ुत्बे तो अवश्य सुनें। यह नहीं कि मुरब्बी साहब ने हमें सारांश सुना दिया था इस लिए हमें पता है कि क्या कहा गया है। सारांश सुनने में तथा पूरा सुनने में बड़ा अन्तर है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- 1934 ई. में एहरार के लोग जमाअत को नष्ट करने की बातें किया करते थे, क़ादियान की ईंट से ईंट बजाने की बातें करते थे, उस समय हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने तहरीक-ए-जदीद की घोषणा करके दुनया में मिश्नरी भेजने की योजना बनाई। तबलीग़ की एक व्यापक योजना बनाई गई और अल्लाह तआला की कृपा से दुनया के प्रत्येक देश में अहमदिया जमाअत को जाना जाता है तथा 209 देशों में जमाअत की स्थापना हो चुकी है। आज जमाअत के रूप में एक मात्र अहमदिया जमाअत ही है जिस पर कभी सूर्यास्त नहीं होता। कहाँ तो एहरारी लोग क़ादियान से अहमदियत की आवाज़ को नष्ट करने की बात करते थे और कहाँ आज दुनया के इस पश्चिमी कोने से पूरे विश्व में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को आपका एक ग़ुलाम और तुच्छ सेवक पहुंचा रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया था, वह बड़ी शान से पूरा हो रहा है। अतः इस बात पर भी प्रत्येक अहमदी को याद रखना चाहिए कि ये बातें उन पर दायित्व डालती हैं तथा इस दायित्व को अदा करना आप सबका कर्त्तव्य है। अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

फ़रमाया- अब मैं तहरीक-ए-जदीद के नए साल की घोषणा करता हूँ तथा प्रथानुसार कुछ आंकड़े भी पेश करता हूँ। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह तहरीक-ए-जदीद का जो साल बीता है 31 अक्तूबर को पूरा हुआ है, यह 82वाँ वर्ष था और पहली नवम्बर से तेरासिवाँ साल आरम्भ हो चुका है। अल्लाह तआला की कृपा से जो रिपोर्टस आईं हैं उनके अनुसार तहरीक-ए-जदीद के माली निज़ाम में अंतर्राष्ट्रीय अहमदिया जमाअत को एक करोड़ नौ लाख पैंतीस हज़ार पाउंड स्ट्रलिंग की क़ुर्बानी का सामर्थ्य मिला है, अलहमदु लिल्लाह। यह वसूली पिछले वर्ष से सतरा लाख सत्तर हज़ार पाउंड अधिक है। जमाअतों की पोज़ीशन के अनुसार पाकिस्तान तो सदैव पहले नम्बर पर होता है, इसको छोड़कर नम्बर एक जर्मनी है, नम्बर दो बर्तानिया है, नम्बर तीन अमरीका है, नम्बर चार कनाडा है, नम्बर पाँच भारत है, छः आस्ट्रेलिया है, सात मिडिल ईस्ट की एक जमाअत है, आठवाँ इन्डोनेशिया है, नवें फिर मिडिल ईस्ट की एक जमाअत है, दस्वाँ ग़ाना है और ग्यारह्वाँ स्विट्ज़र लैन्ड। स्विट्ज़र लैन्ड का क्यूँकि प्रति व्यक्ति चन्दा अधिक होता है इस लिए नाम लिख लिया, नहीं तो दस तक ही मूल सूचि है।

अफ़्रीक़न देशों में सामूहिक वसूली के अनुसार विशेषतः मॉरीशस नम्बर एक है, फिर ग़ाना है, फिर नाईजेरिया, फिर गैम्बिया, फिर साउथ अफ़्रीक़ा, फिर बर्कीना फ़ासो, फिर कैमरोन सीरालियोन लाईबेरिया अथवा तंज़ानिया और माली।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- शामिल होने वालों की संख्या में भी अल्लाह की कृपा से इस वर्ष नव्वे हज़ार की बढ़ौतरी हुई है और चौदह लाख चार हज़ार से अधिक लोग शामिल हुए हैं।

इंडिया की पहली दस जमाअतें- करुलाई (केरला) कालीकट (केरला) फिर हैदराबाद (तिलंगाना) फिर पित्था पिरयम (केरला) फिर क़ादियान, फिर कैनानूर टाउन (केरला) फिर पयंगाड़ी (केरला) फिर देहली, फिर कलकत्ता (बंगाल) फिर सलोर (तमिलनाडु)।

इंडिया के पहले दस प्रदेश जो हैं, पहले नम्बर पर केरला, फिर कर्नाटक, फिर आन्ध्र प्रदेश, फिर तमिल नाडु, फिर जम्मु कशमीर, फिर उडीशा, फिर पंजाब, बंगाल, देहली और महाराष्ट्र। फ़रमाया- इंडिया में पिछले कुछ वर्षों से बड़ी प्रगति है, पहले यहाँ बहुत पीछे थे।

अल्लाह तआला इन सब शामिल होने वालों के जान माल में अत्यधिक बरकत अता फ़रमाए तथा उनकी क़ुर्बानियों को क़बूल फ़रमाए और भविष्य में भी बढ़ चढ़ कर बलिदान का सामर्थ्य प्रदान करे और सदैव इनका ख़िलाफ़त से सुदृढ़ सम्बंध स्थापित करता रहे।